जहां तक हमारी पार्टी का सम्बन्ध है, वर्तमान समस्या का हल निकालने के लिए हम पूरा सहयोग देंगे, जिससे कि सरकार अपना कार्य ठीक तरह से कर सके।

---

1. 35 म० प०

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव --जारी

[हिन्दी]

श्री चन्द्र शेखर : अध्यक्ष महोदय, पिछले कई दिनों से राष्ट्रपति के अभिभाषण पर इस सदन में चर्चा हो रही थी। मैं सबसे पहले तो क्षमा चाहूंगा कि बहुत से सदस्यों की बातों को मैं नहीं सुन पाया। कई सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया और देश के सामने जो समस्याएं हैं, उन समस्याओं के बारे में जिक्र किया। मैं सब समस्याओं की चर्चा करना न आवश्यक समझता हू, न उचित, क्योंकि, कई बार उन समस्याओं के बारे में इस सदन में चर्चा हो चुकी है लेकिन कुछ मौलिक सवाल जो उठाये गए हैं, उनके सदर्भ में मैं दो चार शब्द ही कहना चाहूंगा।

मैं सबसे पहले तो उन सवालों को लेना चाहूंगा, जो माननीय श्री रामकृष्ण यादव ने उठाये। यद्यपि वह अन्तिम वक्ता थे, लेकिन उन्होंने मौलिक सवाल उठाये, मानव मर्यादा के सवाल, गरीबी, पीड़ा और भूख के सवाल, जो सवाल हमारे देश के सवाल हैं।

आजादी की लड़ाई के बाद हमने जो संविधान बनाया, उसमें मानव मर्यादा की हमने प्रतिष्ठा करने का संकल्प लिया। हमने यह भी कहा कि हमारी जनशक्ति ही सबसे बड़ी सम्पदा है और उसी के सहारे हम इस को बना सकते हैं। महात्मा गांधी ने हमको कहा कि श्रम की प्रतिष्ठा करना अगर हम नहीं सीखेंगे तो हम एक नया भारत नहीं बना सकेंगे। इन सवालों के ऊपर हमें ध्यान देना होगा और ध्यान देना चाहिए था, पहले भी, लेकिन दुख है कि इन सवालों पर हम ध्यान नहीं दे सके लेकिन यह कहना सही नहीं होगा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में इन सवालों की ओर संकेत नहीं किया गया। जब राष्ट्रपति ने पुनर्निर्माण के लिए विशेष कोष बनाने की बात कही तो उसके पीछे भावना निहित थी कि करोड़ों लोगों की जनशक्ति को, बाहों की ताकत को हम इस धरती पर लगाकर एक रचना का नया पर्व बनायें। हमने यह भी कहा कि रचनावाहिनी के जरिये करोड़ों युवकों और युवतियों को देश की गरीबी, भूख, निरक्षरता, विषमता को मिटाने के लिए प्रयोग किया जाय, क्योंकि, यही सम्पदा है, जो हमारे लिए सबसे बड़ी शक्ति दे सकती है।

श्री रामकृष्ण यादव ने एक बात कही कि हमारा दुर्भाग्य है कि हजारों वर्षों की सभ्यता और संस्कृति में जहां अनेक उदात्त भावनाएं हैं, अनेक रूढ़ियों के कारण, जाति के नाम पर हमारे देश में हरिजन और आदिवासी, हमारे पिछड़े लोग, इनके साथ समता का व्यवहार नहीं होता, उनके

मन में एक पीड़ा है, उनके मन में एक दर्द है, उस दर्द को मिटाने के लिए उनकी भावनाओं को समझकर उनको समाज में विशेष अवसर देने का काम करना होगा।

हमारे देश में पिछड़े लोग हैं, गरीब लोग हैं, पिछड़ी जातियों के आते हैं और गरीबी भी उनके पल्ले पड़ी है इसलिए उनकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, उन्होंने यह भी सवाल उठाया, और कई अन्य सदस्यों ने उठाया कि भारत में हमेशा हमने सब धर्मों का आदर किया, समभाव से देखा। यह हमारा दुर्भाग्य है कि पिछले कुछ दिनों में, कुछ सालों में मैं कहूं, साम्प्रदायिकता का सवाल हमारे देश में एक बड़ा सवाल बन गया है और हमारे देश में धर्म के नाम पर भाई भाई के खून का प्यासा हो रहा है। कोई धर्म, कोई मजहब आपस में लड़ना नहीं सिखाता। इस संसद् में हमने बार बार इस संकल्प को दोहराया है कि सभी धर्मों को हम साथ लेकर चलेंगे। उस दिशा में काम करने की जरूरत है।

बेरोजगारी का सवाल हमारे देश के सामने है। जो दौलत है, हाथों की ताकत, उसका इस्तेमाल नहीं होता और इसीलिए पहले कहा गया था कि हम काम के अधिकार को मौलिक अधिकार को मौलिक अधिकार मानेंगे लेकिन मौलिक अधिकार मानने के साथ-साथ काम के नये अवसर बनाने होंगे और काम के नये अवसर यदि बनाने हैं तो सीमित साधन हमारे देश में हैं, उन साधनों का उपयोग हमें सोच समझकर करना होगा। जो सीमित साधन हैं, वैभव के लिए उनका इस्तेमाल हो या बेबसी मिटाने के लिए इस्तेमाल हो यह बात हमें तय करनी पड़ेगी। हमने तो यही कहा था, राष्ट्रपति जी ने यह कहा था कि वैभव और बेबसी के बीच में जो खाई है, इसको मिटाने के लिए हमें नए कदम उठाने पड़ेंगे। हमें किसी के वैभव से कोई झगड़ा नहीं कोई लड़ाई नहीं, लेकिन अगर बेबसी के इलाके में उम्मीद का एक नया चिराग जलाना है तो वैभव के लोगों को थोड़ी कुर्बानी करनी पड़ेगी। ये नीतियां इस देश में बनानी पड़ेंगी और इसीलिए योजना की बात हमारे देश में उठाई गई। सन् 1950 में योजना आयोग बना, हमारे पुराने मित्र और नेता यमुना प्रसाद शास्त्री जी ने यह कहा था, योजना आयोग की बातें नहीं की गई। अगर उन्होंने देखा होगा, तो हमने कहा था उस भाषण में, 31 मार्च तक आठवीं योजना का प्रारूप तैयार कर लिया जाएगा। हम योजना को अस्वीकार नहीं कर सकते हैं, नजरअन्दाज नहीं कर सकते हैं। सीमित साधनों में बड़े देश की आकांक्षाओं को पूरा करना है तो योजना की प्राथमिकता देना हमारे लिए बहुत आवश्यक है और उसी हिसाब से योजना आयोग ने काम किया है इन पिछले दिनों में और आज भी वह काम कर रहा है।

हमारे माननीय मित्र, श्री सोमनाथ चटर्जी, ने बार-बार श्रमशक्ति के सवाल गरीबी के सवाल और बेकारी के सवालों को उठाया। हम समझते हैं कि अगर बेकारी नहीं मिटेगी तो उसके मन में संताप पैदा होगा। गरीबी स्वयं में एक अभिशाप है, लेकिन मन का संताप, जो बेकार के मन में पैदा होता है, वही समाज को तोड़ देता है और समाज में उच्छृंखलता पैदा हो जाती है। कुछ मित्रों ने असम के बारे में, पंजाब के बारे में और काश्मीर के बारे में सवाल उठाए। मैं आभारी हूं, नेता विरोधी दल, आडवाणी जी का, कि उन्होंने इन सवालों की अहमियत को समझा है। पंजाब में हमारी

बराबर कोशिशों के बावजूद भी स्थिति अभी सामान्य नहीं है। आज भी वहां पर कत्ल हो रहे हैं, लेकिन हमने बराबर एक ही यह प्रयास किया कि यह मौत का माहौल बन्द करो। आपसी बातचीत के जरिए इस समस्या का हल करो और मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि पिछले तीन महीनों में, मैं यह नहीं कहता हूं कि हालात बदल गए हैं, लेकिन तनाव में जरूर कमी हुई है और हमने वह कोशिश की तथा उस हालात को हम और आगे बढ़ाना चाहते थे। हम यह नहीं कहते कि धरती पर कोई स्वर्ग उतर आया है। न मैंने कभी यह वायदा किया था, न आज यह कह रहा हूं, मैं मानता हूं—

"माना कि हम चमन को गुलजार न कर सके।
कुछ खार तो हम कर सके, गुजरे जिधर से हम ।।"

हम चमन की गुलजार नहीं कर सके, जिस रास्ते से हम गुजरे उस रास्ते में भले ही हमारे पैरों में कांटे आए हों, लेकिन हमने रास्ते के कांटे कम किए हैं। हमारे भाई इन्द्रजीत गुप्त जी ने हमें सलाह दी, सलाह सही सलाह थी, उन्होंने यह कहा कि चन्द्र शेखर जी को सोचना चाहिए। मैं कहता हूं—मैं जरूर सोचता हूं और मैं जानता हूं किस पर विश्वास करूं और किस पर न करूं, कभी इधर से और कभी उधर से, अनुभव एक जैसा ही होता है, लेकिन मैं उसकी चर्चा नहीं करूंगा। मैं जानता हूं जब देश पर संकट है, जिस संकट का जिक्र एक-एक सदस्य ने किया है, तो क्या इस संकट का सामना करने के लिए यह जरूरी नहीं है कि हम देश में आत्म विश्वास और आपसी विश्वास का माहौल बनायें और एक-दूसरे पर आस्था रखें। हम यह नहीं कहते कि कोई आदमी पूरी शक्ति रखता है, पूरी क्षमता रखता है। मैंने बहुत लोगों से कुर्बानी के सबक सीखे हैं। हमारे कई मित्रों ने कहा कि आकांक्षाओं को दबाकर रखना चाहिए, एम्बिशन में अंधा नहीं हो जाना चाहिए। जब मैं यह उन लोगों से सुनता हूं, जो एम्बिशन पूरा करने के लिए कई बार मेरे दरवाजे पर आकर कह चुके हैं, तो मुझे दुःख होता है, तकलीफ होती है और कुछ नहीं कह सकता। मैं आपसे अध्यक्ष महोदय, कहना चाहता हूं····(व्यवधान)···क्योंकि इस सदन के जरिए मैं इस देश को बताना चाहता हूं कि यह पर्सनल-एम्बिशन नहीं है, यह व्यक्तिगत आकांक्षा नहीं है। अगर देश में संकट में हम जरूर विश्वास का माहौल बनाना चाहते थे और अगर वह हमारी गलती है, तो उससे हमारे लोगों को प्रसन्नता हो जाती है। मैंने किसी को धोखा नहीं दिया है। अगर किसी ने धोखा दिया है, तो दुनिया में एक महापुरुष नहीं है, जिसको धोखा न हुआ हो। धोखा देना बुरा है, धोखा खाना बुरा नहीं है। हमने धोखा किसी को नहीं दिया है, न इधर के लोगों को दिया है और न उधर के लोगों को दिया है। धोखा देने वाले अगर बार-बार प्रयास करते हैं और बार-बार मैं धोखा खाता हूं, तो मैं इनको अपने जीवन की उपलब्धि मानता हूं। मुझे एक बात आडवाणी जी ने या किसी और मित्र ने या इन्द्रजीत गुप्त जी ने कही या कहा जाएगा कि दोनों ने कही, विरोधी पार्टियों की ओर से सरकार गिर गई। अगर सरकार आती है तो विरोधी पार्टियों की ओर से नहीं जाएगी, सरकार जाएगी उनकी वजह से जो हमारे समर्थक लोग हैं। इसमें कोई गजतफहमी नहीं होनी चाहिए और क्यों कर रहे हैं कैसे कर रहे हैं, क्या करेंगे, मुझे नहीं मालूम ? लेकिन इतना मैं जरूर कहना चाहता हूं कि विरोधी पक्ष की आलोचना मैं समझ सकता हूं, विरोधी पक्ष की ओर से आक्रमण को मैं समझ सकता हूं, लेकिन समर्थन देने वाली पार्टी की

विक्षिप्तता, अक्षमता और उसकी गैर-हाजिरी ये इतिहास की एक निराली घटना है (व्यवधान) जिसको मैं अच्छी तरह समझता हूं, लेकिन नए मानदंड बन रहे हैं। आप यह मत समझिए कि मैं गुस्से में हूं हमारे कई मित्र कह रहे थे कि मैं गुस्से में हूं दुःख में हूं न मैं गुस्से में हूं और न मैं दुख में हूं। मित्रों के मुताबिक तो मैं किसी पद पर पहुंचने लायक था ही नहीं, जो इधर बैठे हुए हैं, जो बड़े ऊंचे पदों पर सरकार में थे, उनकी योग्यता, क्षमता, कुर्बानी और बलिदान ऐसा था कि उनके लिए आरती उतर रही थी सत्ता की कि बार-बार आओ। हमको तो कभी किसी ने पूछा नहीं और पहला मौका मिल गया, मैं उसमें कूद पड़ा। अगर यह कहने में आपको संतोष है तो कम से कम अपने मन की अनगंल भावना से आप अपने छोटेपन को दिखा सकते हो, मेरे व्यक्तित्व को छोटा नहीं कर सकते हो।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात जरूर कहना चाहता हूं कि 1968-69 से पहले 1962 में पहली बार मैं पार्लियामेंट में आया और 1990 तक अगर मैं अपनी भावनाओं को दबा कर रख सकता था तो 1990 में भी दबा करके रखता और उसी की वजह से नहीं दबा सका, जिसका जिक्र हमारे माननीय आडवाणी जी ने किया है। मैं समझता हूं कि देश के सामने संकट है, देश खतरे में जा रहा है। जो संवैधानिक खतरा आज आडवाणी जी बता रहे थे, मैं समझता हूं मेरी समझ गलत हो सकती है, मेरा निर्णय गलत हो सकता है। लेकिन मैं समझता था कि देश को रसातल में ले जाने की जो साजिश हो रही है उस साजिश को मैं रोकूंगा, जितनी मेरी शक्ति है। मैं कोई इतिहास का आखिरी व्यक्ति नहीं हूं, इतिहास के आखिरी व्यक्ति तो वे पैदा हुए हैं जिसके साथ राजनीति शुरू होती है और राजनीति का अन्त होता है। मैं तो उन लोगों में से हूं जो समझते हैं कि गांधी जी नहीं रहे, जयप्रकाश नहीं रहे तो यह देश चल रहा है, तो चन्द्र शेखर के बिना भी यह देश चलेगा। कुछ लोग मूल्यों वाले लोग हैं जिनके बिना यह देश नहीं चल पाएगा।

अध्यक्ष महोदय, मैंने यह कोशिश की, उस कोशिश से क्या हुआ, क्या नतीजा निकला उसका यह देश और दुनिया निर्णय करेगी और उसका निर्णय हुआ है, इस देश के अन्दर भी और दुनिया के अन्दर भी। मैं अपने दोस्तों से यह कहना चाहूंगा कि कई लोगों ने जिक्र किया, न केवल देश के अन्दर संकट है, गरीबी, भूख-प्यास, बेकारी, साम्प्रदायिक उन्माद का पिछड़ों और गरीब आदिवासियों और हरिजनों के दिलों में एक डूरे एहसास का, बस दुनिया में एक ऐसी ताकतें उभर रही हैं जो शान्ति के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। यहां पर खाड़ी युद्ध का जिक्र किया मैं उसके बारे में तफसील में कह चुका हूं, मैंने सोच-समझ कर निर्णय किया और आज मैं फिर कहना चाहता हूं कि हम पहले पेलस्टिन की आजादी के पक्ष में हैं लेकिन हम यह कभी नहीं समझ सके कि पेलस्टिन को आजाद कराने के लिए कुवैत के ऊपर अधिकार करना भी जरूरी है, अगर कोई तर्क शास्त्र हो, तो उस तर्क शास्त्र के पण्डित लोग ही उसको जानें। आज भी इराक के मामले में जिस दिन से युद्ध बन्द हुए, भारत अकेला देश है दुनिया में जो इराक के साथ खड़ा है। वहां की संरचना का काम, पुनर्रचना का काम, वहां के विकास का काम, वहां की जनता के दिल में होना चाहिए। आज पहली बार जब हिन्दुस्तान से मदद मांगी गई तो हिन्दुस्तान ने पहली बार पहल की कि कुवैत की पूरी तरह से हम मदद करेंगे और उसी तरह से इराक को भी हम मदद करेंगे; उसकी पुनर्रचना के लिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह मानता हूं कि किसी क्षेत्र की, किसी इलाके की हिफाजत की जिम्मेदारी उस इलाके के लोगों की है। कोई बाहर की ताकत आ करके वहां पर पुलिस का काम करे, इसको न हमने स्वीकार किया है और न आगे हम स्वीकार करने वाले हैं। लेकिन कुछ खुदाई खिदमतगार हैं, जो हर समय पहुंच जाते हैं, हर जगह पर और वे ये कहने लगते हैं कि हम ही दुनिया को चला रहे हैं। लेकिन मैं यह जानना चाहूंगा इस सदन के तमाम सदस्यों से, विदेश नीति केवल कोरी कल्पना नहीं है, विदेश नीति कोई कविता की उड़ान नहीं है, विदेश नीति इस देश के हितों की रक्षा के लिए एक हथियार है, साधन है। मैंने पहले भी कहा था कि हमारे लिए राष्ट्र के हितों की रक्षा सर्वोपरि है और उस राष्ट्र के हितों की रक्षा करते हुए हम अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं होंगे। मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

मैं उस बारे में जाना नहीं चाहता, हम लोगों को एक परनिन्दा की आदत पड़ गई है, आत्म-ग्लानि की आदत पड़ गई है हम मर गये, कोई नहीं पूछ रहे हैं, हम दुनिया में पीछे हट गये, कहां हट गये, 85 करोड़ के देश को कौन पीछे हटायेगा, थोड़ा आत्मविश्वास रखें। प्रधान मंत्री की नहीं, यह यह देश के 85 करोड़ लोगों की शक्ति है, अगर हमें अमरीका की जरूरत है तो अमरीका को भी हमारी मदद की जरूरत है। थोड़ी-सी बात पर हाथ-पांव फूल गये, अमरीका के गुलाम हो गये। गुलामी जब दिमाग में भरी हुई होती है यो जुबान से बराबर वह निकलती है और कोई बात नहीं होती। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस देश की एक बड़ी शक्ति है और उस शक्ति का हमें इस्तेमाल करना चाहिए चाहे चीन हो, या पाकिस्तान हो, या ईरान हो। मैंने पहले भी कहा है कि दुनिया के सब राष्ट्रों ने भारत की भूमिका की प्रशंसा की है। और कुछ खुदाई-खिदमतगार हैं जिनको चारों तरफ अंधेरा दिखाई पड़ता है, अगर सूरज की रोशनी में किसी चिड़िया को दिखाई नहीं देता तो सूरज की रोशनी का कोई दोष नहीं, चिड़िया की आंख का दोष है। यही मैं कहना चाहता हूं, इसके अलावा मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

हमको और आपको निर्णय करना पड़ेगा कि भारत किस ओर जाना चाहता है, भारत की क्या भूमिका होनी चाहिए, क्या भारत इन ताकतों का पिछलग्गू बना रहेगा, वह किसी का पिछलग्गू नहीं है, हमारी स्वतंत्र पर-राष्ट्र नीति है, हम गुट-निरपेक्ष के सिद्धांतों को मानते हैं, हम पिछड़े, विकासशील देशों के साथ एका बनाये रखना चाहते हैं और मैं अपने मित्रों को अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भारत की जनता हर समय जहां उपनिवेशवाद होगा, जहां शोषण होगा, जहां शांति का हनन होगा वहां दबे हुए लोगों के साथ अपनी आवाज हम मिलायेंगे, यही हमारी नीति है, इसे हम ज्यों का त्यों बनाये रखेंगे।

अध्यक्ष महोदय, कानून व्यवस्था की बात की गई। यह भी कहा गया कि कठपुतली की सरकार है और कहा गया कि इस कठपुतली की सरकार ने निर्णय लिये और निर्णय तो कोई मालूम नहीं हुए, एक तमिलनाडु का निर्णय है जिस पर बड़ी चर्चा होती है। पांडिचेरी भी और जोड़ दीजिए। पांडिचेरी की जो हालत है वह आप अखबारों में पढ़ लीजिए, अगर मेरी रिपोर्ट पर विश्वास नहीं

है। मैं यहां पांडिचेरी के बजाय तमिलनाडू की बात करता हूं। इस सदन के अन्दर, इस सदन के अन्दर ही नहीं, बल्कि इस सदन के पहले वाले सत्र में मैंने विरोधी नेताओं से आपसी व्यक्तिगत बातचीत में जहां हमारे मित्र बैठे हुए थे उस समय मैंने कहा था, जब हमसे कहा गया कि आप एक विश्वास दिलाइये कि आप तमिलनाडू सरकार को भंग नहीं करेंगे, उस समय मैंने कहा चूंकि आप हमसे पूछ रहे हैं मैं एक ही विश्वास दिलाता हूं अगर तमिलनाडू की सरकार अपना रास्ता नहीं बदलेगी तो मुझे उसको भंग करने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह जायेगा (**व्यवधान**)

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर) : यह बात नहीं कही थी।

प्रो० मधु दण्डवते : मैंने जब तमिलनाडू का सवाल उठाया आपने निश्चित तरीके से आश्वासन दिया था कि मैं तमिलनाडू की सरकार को भंग नहीं करना चाहता हूं यह आपने स्पष्ट कर दिया था, अब आप चाहें तो बदल सकते हैं।

श्री चन्द्र शेखर : मैंने यह नहीं कहा कि नहीं करूंगा, मैंने कहा कि भंग करने के लिए पहले सौ बार सोचूंगा, इतनी बुद्धि हमारी है। फर्क यह पड़ता है कि मुझे भंग करना पड़ा इसलिए मैंने भंग की।

श्री शोपत सिंह मक्कासर (बीकानेर) : कांग्रेस ने जो आपसे कहा वह आपने किया।

श्री चन्द्र शेखर : मैं इस तरह के विवाद में नहीं पड़ना चाहता, न इन विवादों की वजह से उन बातों को कहना चाहता हूं जिनसे लगे तमिलनाडू की सरकार को भंग करना पड़ा। दूसरे सदन का रिकार्ड है, वहां पर विपक्ष के नेता गुरूपदस्वामी जो माननीय दण्डवते जी की पार्टी के नेता हैं उनके वक्तव्य को उठाकर पढ़ लीजिए कि मैंने क्या कहा और उन्होंने क्या कहा। मैं ऐसी बात नहीं कहता हूं कि जो एक जगह पर एक हो और दूसरी जगह पर दूसरी हो। कांग्रेस पार्टी एक राजनीतिक पार्टी है, इस सदन में भी हमारा समर्थन कर रही थी। मैं यह नहीं कहता कि उस पार्टी की मैं कोई बात नहीं मान सकता, लेकिन हर बात मानने के पीछे कोई मर्यादा होती है, उस मर्यादा का उल्लंघन करके किसी की कोई बात मानने के लिए मैं विवश नहीं हूं। इसीलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि देश की मर्यादा ऐसी है जिस मर्यादा को ध्यान में रखकर कई बार समझौते करने पड़ते हैं। पिछले दो-तीन दिन में जो हुआ इसी सदन मे, इसी सदन में ही नहीं, दूसरे सदन में भी जो हुआ, आडवाणी जी ने कहा उससे मैं पूरी तरह सहमत हूं। इससे अशोभनीय और दुखद बात कोई नहीं हो सकती। लेकिन उन बातों को मैं चुपचाप सुनता रहा और उसका एक ही कारण था कि अध्यक्ष महोदय, आपके नेतृत्व में चर्चा हो रही थी। मैं नहीं चाहता था कि इस चर्चा को बीच में रोककर कोई बात कहूं। मैं आप से कहना चाहता हूं कि न मैं कोई तालमेल बैठा रहा था और न मैं सुलह

समझौता कर रहा था। मैं अपनी बात जानता हूं कि मुझे कहां जाना है। मैं जानता हूं कि किस समय क्या कदम उठाने हैं। अगर सहयोग मिलता है तो स्वागत। अगर सहयोग नहीं मिलता है तो उनकी मरजी क्योंकि वे हमारे अधिकार में नहीं हैं। मैं एक बात कहना चाहता हूं, सोचना जरूर चाहिए कांग्रेस पार्टी को। दो कांस्टेबल चले गए, इसके लिए भारत के संविधान को खतरे में डाल देना, इस संसद को इस हालत में पहुंचा देना, इसलिए जैसी जिसकी बुद्धि होगी वैसे ही इस्तेमाल करेगा। इसके अलावा मैं कुछ और नहीं कहना चाहता था। बुद्धि के अनुरूप सभी लोग अपना काम करेंगे। उधर से भी कुछ लोग कहते हैं कठपुतली है तो भी अपनी बुद्धि के अनुसार बोलते हैं। कठपुतली को कठपुतली ही दिखाई पड़ेगी। वे नहीं जानते हैं कि कभी-कभी छोटा हनुमान लंका को दहन कर देता है हनुमान छोटा होकर के भी.....(व्यवधान) इसलिए यह गलतफहमियां निकाल दीजिए। सवाल व्यक्तियों का नहीं है। सवाल व्यक्तियों के विश्लेषण का नहीं है। सवाल देश की परिस्थितियों और देश की समस्याओं का है। इन समस्याओं पर हमें और आपको आज नहीं तो कल मिलकर देखना पड़ेगा। मैं धन्यवाद देता हूं विरोध पक्ष के सभी नेताओं को, जिन्होंने कहा है कि संवैधानिक संकट को समाप्त करने के लिए वे सहयोग करेंगे। मुझे विश्वास है कि सहयोग से कोई रास्ता निकलेगा। मुझे विश्वास है कि इस संकट को मिटाने में आपका सबका सहयोग मिलेगा। मैं एक बात नम्र शब्दों में कहना चाहता हूं। यह सही है कि राजनीतिक वास्तविकता है और संसदीय राजनीतिक वास्तविकता गणित की वास्तविकता है जिसमें अंक गणित को बदला नहीं जा सकता। अगर कांग्रेस पार्टी यहां मौजूद नहीं है, वे पता नहीं है ... (व्यवधान) मैं जानता नहीं कि उनका समर्थन है या नहीं। लेकिन आज उनका जो आचरण है, मैं विचार के बारे में नहीं बल्कि आचरण के बारे में कह रहा हूं कि आचरण पर रहकर के मैं इस सरकार को नहीं चला सकता। अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से अभी राष्ट्रपति महोदय के पास जाकर के इस सरकार का त्याग-पत्र देता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि इसके बाद इस सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाए। यह राष्ट्रपति महोदय पर निर्भर करता है कि वे क्या निर्णय लेंगे। मैंने अपने सहयोगियों से सलाह ली है और हम इस निर्णय पर कल ही पहुंचे थे कि इस सदन को चलाने की कोई मान्यता, कोई आवश्यकता नहीं। मेरा निर्णय है कि सरकार इस्तीफा दे रही है। मैं आपसे कहता हूं कि सदन की परम्पराओं के अनुसार मेरे त्याग-पत्र की इस घोषणा के बाद इस सदन की कार्यवाही एक मिनट नहीं चल सकती। यह सदन स्थगित करने का मैं आपसे औपचारिक रूप से अनुरोध करता हूं कि सरकार जब नहीं है तो सदन नहीं चल सकता। मैं अभी जाकर के राष्ट्रपति महोदय को त्याग-पत्र देता हूं और अपने मित्रों को विश्वास दिलाता हूं कि कोई दाव-पेच की राजनीति इधर से नहीं होगी, उधर से न हो तो ज्यादा अच्छा है। हम सब मिलकर स्पष्ट राजनीति की ओर आगे बढ़ें यही मेरी कामना है। ....(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधानमंत्री जी की सदन में त्याग-पत्र देने की घोषणा से राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव को सदन के मतदान के लिए रखना निष्फल हो गया है और अब